28
नवविवाहितों के लिए सबक
(7:1–6)

"पवित्र किया जाना" अर्थात परमेश्वर द्वारा अलग किया जाना और फिर नई स्थिति से मेल खाता जीवन बिताने पर हमारा अध्ययन जारी है। रोमियों 6 में पौलुस ने अपने संदेश को समझाने के लिए दो रूपकों का इस्तेमाल किया: तुम पाप के लिए मर चुके हो (सो इसके अनुसार *काम करो*)। रोमियों 7 में पौलुस ने एक तीसरे रूपक का परिचय कराया: तुम मसीह के साथ ब्याहे गए हो (देखें आयत 4; KJV) (सो इसके अनुसार *काम करो*)। रोमियों 7 की पहली छह आयतें इस प्रकार हैं:

> हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं व्यवस्था के जानने वालों से कहता हूं), कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है? क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।
>
> सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं। क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएं, जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं। परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।

पौलुस मसीह और कलीसिया के सम्बन्ध समझाने के लिए आमतौर पर विवाह का इस्तेमाल करता था। 2 कुरिन्थियों 11:2 में उसने कहा "मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंआरी की नाईं मसीह को सौंप दूं।" 1 कुरिन्थियों 6:17 में उसने मसीह के साथ हमारे "जुड़ने" की बात की। इस रूपक का उसका सबसे प्रसिद्ध इस्तेमाल इफिसियों 5 में है:

> हे पत्नियो, अपने–अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने–अपने पति के आधीन रहें।
>
> हे पतियो, अपनी–अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम

करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। ज़्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा बरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उस की देह के अंग हैं। इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं (आयतें 22-32)।

आगे बढ़ने से पहले मुझे यह ध्यान देना चाहिए कि अध्याय 7 का मुज़्य विषय "व्यवस्था" है। जे. डी. थॉमस ने लिखा है कि "[अध्याय] 7 का सामान्य विषय व्यवस्था के साथ मसीही का सज़्बन्ध है, जहां [अध्याय] 6 में यह पाप के साथ मसीही का सज़्बन्ध था।"[1] अगले पाठ में हम व्यवस्था के विषय पर चर्चा करेंगे। परन्तु ऐसा करने से पहले मैं 1 से 6 आयतों में से मसीह के साथ हमारे विवाह के कुछ मूल नियम निकालना चाहता हूं। मैं विशेषकर उस *अन्तर* पर ज़ोर देना चाहता हं जो हमारे जीवनों में आना चाहिए।

भौतिक स्तर पर कइयों को कुछ समझ ही नहीं है कि विवाह वास्तव में ज़्या है। उनका विवाह तो हो जाता है, लेकिन जीवन ऐसा ही रहता है जैसे वे अविवाहित हों।[2] आत्मिक रूप में भी ऐसा ही है। लगता है कि कइयों को पता ही नहीं कि मसीह के साथ विवाहित होने का ज़्या अर्थ है। वे मसीह की दुल्हन (कलीसिया) का भाग तो बन जाते हैं, परन्तु उनका जीवन ऐसा होता है जैसे उन्होंने प्रभु के साथ कोई वचनबद्धता न की हो।

मैं इस पाठ को "नवविवाहितों के लिए सबक" नाम दे रहा हूं। मेरा ज़ोर जीवन साथी के साथ सामाजिक बन्धन नहीं बल्कि मसीह के साथ हमारा आत्मिक सज़्बन्ध है। इसके साथ ही आपको इसके बारे में भी कुछ सीखने को मिलेगा कि अपने सांसारिक जीवन साथी के साथ आपका सज़्बन्ध कैसा होना चाहिए। इफिसियों 5:22-32 में पौलुस का ज़ोर मसीह और कलीसिया पर था (देखें आयत 32), परन्तु हम फिर भी इन आयतों का इस्तेमाल पति/पत्नी सज़्बन्धों के बारे में सीखने के लिए करेंगे।

चौकस रहें (7:1-4)

हमें *पता होना* चाहिए कि मसीही बनने पर हमारा "विवाह" यीशु से होता है। यह सच्चाई हमारे वचन पाठ की आयत 4 में बताई गई है। उस आयत को समझने के लिए हमें इससे पहले की आयतों की समीक्षा करनी आवश्यक है।

एक नियम (आयत 1)

अध्याय 7 का आरज़्भ "ज़्या" शज़्द से होता है। अंग्रेज़ी में यह "या" से है। यह पवित्र किए जाने पर अध्याय 6 के पिछले भागों से इस भाग को जोड़ता है। "ज़्या तुम नहीं जानते ... ?" पौलुस

ने यहां तीसरी बार कहा कि "ज़्या तुम नहीं जानते?" (देखें 6:3, 16)। हर बार उसने मसीही लोगों के पवित्र जीवन बिताने के बारे में विचार समझाने के लिए प्रश्न किया। पौलुस ने उन्हें सिखाने के लिए उसी को आधार बनाया, जो उन्हें पहले से मालूम था। उसने कहा, "हे भाइयो ज़्या तुम नहीं जानते" (आयत 1क)। 1:13 के बाद से पौलुस ने अपने पाठकों को "हे भाइयो" नहीं कहा था, परन्तु हमारे वचन पाठ में उसने दो बार ऐसा कहा (7:1, 4)। शायद वह अध्याय 7 के महत्वपूर्ण मुद्दों की बात करते हुए रोम में रहने वालों के साथ अपने सज़्बन्ध को मज़बूत बनाना चाहता था।

पौलुस आश्वस्त था कि उसके भाई इस नियम को समझ *लेंगे* जो वह बताने जा रहा था: "(मैं व्यवस्था के जानने वालों से कहता हूं)" (आयत 1ख)। यूनानी धर्मशास्त्र में "व्यवस्था" के लिए शज़्द के साथ कोई निश्चित उपपद नहीं है। लैरी डीसन के अनुसार अध्याय 7 में पौलुस "विशेषकर (परन्तु विशिष्ट रूप से नहीं) मूसा की व्यवस्था" की बात कर रहा था[3] (देखें आयत 7)। आयत 1 का नियम मूसा की व्यवस्था पर लागू होता था परन्तु यह सामान्य व्यवस्था के लिए भी था।

कौन सा नियम? "जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है?" (आयत 1ग)। अध्याय 6 में पौलुस ने तर्क दिया था कि मृत्यु कानूनी दायित्वों को खत्म कर देती है (6:7 पर टिप्पणियां देखें)। अब उसने इसी सच्चाई पर फिर से ज़ोर दिया। यह कानूनी सिद्धांत "विश्वव्यापी रूप से स्वीकारा जाता और अपरिवर्तनीय" रहा है।[4] इस नियम को समझाने के लिए पौलुस कई उदाहरणों का इस्तेमाल कर सकता था: मर चुका व्यज़्ति कोई कर अदा नहीं करता; मर चुके व्यज़्ति को उसके द्वारा किए गए अपराध के लिए मुकद्दमा नहीं लड़ना पड़ता।[5] परन्तु पौलुस ने अपने उद्देश्य से मेल खाता दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाला विवाह का उदाहरण चुना।

एक उदाहरण (आयतें 2, 3)

आयत 2 का आरज़्भ "ज़्योंकि" (*gar*) शज़्द से होता है जो "का कारण दिखाना" का सुझाव देता है। कई अनुवादों में "for example" (NIV; REB; Phillips) या "for instance" (JB; AB) है। पौलुस ने कहा, "ज़्योंकि [उदाहरणार्थ] विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई" (आयत 2)।

"पति के सज़्बन्ध में व्यवस्था" (मूलत: "उसके पति की व्यवस्था") उसी व्यवस्था को कहा गया है, जो पत्नी को पति के साथ बान्धती है। पौलुस के दिमाग में मूसा की व्यवस्था में दिए गए नियम होंगे, परन्तु कई समाजों में विवाह के सज़्बन्ध में अपने नियम थे। वे नियम पत्नी को अपने पति से उसके जीते जी बान्धकर रखते थे, परन्तु पति की मृत्यु होने पर वह उसके अधीन नहीं मानी जाती थी। यीशु के अनुसार, इस जीवन के बाद, लोगों में "ज़्याह शादी न होगी" (मज़ी 22:30)।

आयत 3 में अपने उदाहरण को विस्तार देते हुए पौलुस ने कहा, "सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष *की हो जाए* तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।" "हो जाए" यूनानी शज़्द *ginomai* से लिया गया है, जो मूल में "बनना" के अर्थ वाला बहुआयामी यूनानी शज़्द है।[6] इस संदर्भ में इसका अर्थ "एक पुरुष की पत्नी *बनना*" (यानी

''विवाह करना''; देखें NIV; मेकोर्ड) है।

''हो जाए'' या ''विवाहित'' के बजाय कई अनुवादों में ''के साथ रहे'' या ''अपने आप को दे दे'' (''शारीरिक सम्बन्धों के साथ'' के लिए मधुर वचन) है। परन्तु आयत के अन्तिम भाग में *ginomai* (जिसका अनुवाद ''हो जाए'' है) के इस्तेमाल पर ध्यान दें। लियोन मौरिस ने लिखा है कि ''NIV; में ''marry'' है और कहा कि ''यह इसका स्पष्ट बोध है, चाहे पौलुस ने सामान्य क्रिया 'विवाह करना' का इस्तेमाल नहीं किया।''[7] फिर पौलुस के कहने का अर्थ था कि कोई स्त्री अपने पति के साथ तब तक बन्धी है जब तक वह जीवित है, परन्तु पति की मृत्यु के बाद उसे विवाह करने की छूट है।

एक प्रासंगिकता (आयत 4)

पौलुस एक रूपक पर बनाने अर्थात यह दिखाने को तैयार था कि मृत्यु के द्वारा पापियों को छुड़ाया गया है ताकि उनका विवाह एक नये पति से हो सके, परन्तु उसने वैसी प्रासंगिकता नहीं बनाई जैसी हमें उज़्मीद हो सकती है। उसके उदाहरण में *पति* मर गया है, परन्तु उसकी प्रासंगिकता में मरने वाली पत्नी है।[8] परन्तु *मसीही व्यक्ति के* पाप से *मरने* पर उसके पिछले ज़ोर को ध्यान में रखते हुए (रोमियों 6:2, 7, 8, 11)। इस आकृति में स्विच होने के बावजूद,[9] मुज़्य बात वही रहती है कि मृत्यु विवाह के बन्धन को खत्म कर देती है, जिससे जीवित रहने वाला पति या पत्नी विवाह कर सकता है।

पौलुस ने कहा, ''सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ...'' (7:4)। यूनानी बाइबल में ''व्यवस्था'' से पहले एक निश्चित उपपद है, जिस कारण NASB (और कई अन्य संस्करणों) में व्यवस्था के लिए अंग्रेज़ी शज़्द ''Law'' का पहला अक्षर ''L'' बड़ा लिखा है, जो इस बात का संकेत है कि पौलुस के दिमाग में मूसा की व्यवस्था थी।

टीकाकार यह कहते हुए कि यहूदी लोग व्यवस्था से नहीं, बल्कि परमेश्वर से ''ज़्याहे'' गए थे (देखें यिर्मयाह 31:32) और यह कि व्यवस्था तो केवल ''विवाह के अनुबन्ध'' का एक भाग था कई बार इस पर आपज़ि करते हैं। यह सही है, परन्तु यहूदियों ने व्यवस्था को इतना ऊंचा उठाया था कि *जैसे* वे इससे ज़्याहे गए हों। निश्चय ही इससे ''बन्धे'' थे (देखें रोमियों 7:6)। अब पौलुस ने कहा कि उन्हें ''मसीह की देह के द्वारा'' (7:4ख) उस सज़्बन्ध से छुड़ाया गया था।

''मसीह की देह के द्वारा'' यह कहने का कुछ असामान्य ढंग है कि हमें आत्मिक स्वतन्त्रता मिलती है। मसीह की कलीसिया को उसकी देह कहा गया है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:8; देखें 1 कुरिन्थियों 12:27), जिस कारण कइयों को लगता है कि पौलुस उद्धार पाए हुए लोगों की देह के सदस्य बनने की बात कर रहा था। उदाहरण के लिए रोमियों 7:4 में CEV और TEV ''मसीह की देह का भाग'' अनुवाद किया गया है। सज़्भवतया चाहे पौलुस ''मसीह की देह'' की बात कर रहा था, जो क्रूस पर चढ़ाई गई थी। AB में ''मसीह की [क्रूस दी हुई] देह के द्वारा ... तुम मर गए।'' इफिसियों 2:15 में पौलुस ने कहा कि मसीह ने ''*अपने शरीर में* ... व्यवस्था को जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया।''

रोमियों 7:4 में NEB में ''मसीह की देह के साथ पहचान होने के द्वारा तुम व्यवस्था के लिए

मर गए'' है। ''मसीह की देह के साथ पहचान'' तब होती है जब हम बपतिस्मा लेते हैं। इस कारण मौरिस ने सुझाव दिया कि ''मसीह की देह के द्वारा'' वाक्यांश ''रोमियों 6 में पौलुस द्वारा ज़ोर दी गई सच्चाई के सम्बन्ध में कि हम 'उसकी मृत्यु में बपतिस्मा पाने से उसके साथ गाड़े गए' और 'हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए' (6:4, 5)'' बनाता है।[10] विलियम बार्कले ने इतना ही लिखा कि ''मसीह की मृत्यु में हम बपतिस्मे के द्वारा साझी होते हैं।''[11]

वचन पाठ में आगे हम देखते हैं कि ''मसीह की देह के द्वारा'' हम ''व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए'' (आयत 4क, ख)। हमें ''व्यवस्था के लिए मरे हुए'' *क्यों* बनाया गया? ''ताकि [हम] उस दूसरे के हो जाएं'' (आयत 4ग)। कइयों का मानना है कि पौलुस मालिक की अपनी आकृति को गुलाम में बदल रहा था, परन्तु आयत 4 में ''हो जाओ'' के लिए शब्द मूलत: आयत 3 वाला, जहां इसका इस्तेमाल विवाह के लिए हुआ है। इसलिए मेरा मानना है कि पौलुस ने विवाह के रूपक का इस्तेमाल करना जारी रखा (देखें KJV; मेकोर्ड; SEB)।

हमारा विवाह *किससे* होता है? ''जो मरे हुओं में से जी उठा'' (आयत 4घ) अर्थात मसीह से। कोई मानवीय सम्बन्ध इतना नजदीकी नहीं है जितना प्रेमी, पति और पत्नी का। कोई आत्मिक सम्बन्ध इतना घनिष्ठ नहीं है जितना मसीह और उसकी कलीसिया का। इस प्रकार पौलुस ने उस विशेष सम्बन्ध को दिखाया जो मसीह के साथ हमारा है–रहस्यपूर्ण, अधीन रहने वाला, विशेष अधिकार वाला और निकटतम[12] सम्बन्ध यीशु के साथ हमारा है।

इस अद्भुत सच्चाई की जटिलताओं को देखने से पहले आइए पहले इस पर विचार करते हैं कि यह अद्भुत कैसे है। पहले विचार करें कि व्यवस्था से ''ज्याहे'' होने पर कैसा लगता है। अपने आप को एक जवान दुल्हन होने की कल्पना करें, जिसका विवाह समझौता न करने वाले पूर्णतावादी से हो जाता है। वह बुरा आदमी नहीं है, परन्तु अपने आप में ''सम्पूर्ण'' है और आप से सम्पूर्ण होने की उम्मीद करता है। हर दिन वह उन सब कामों की एक सूची बनाता है, जो उसने करने होते हैं और बिल्कुल उसी सूची के अनुसार किसी काम के न होने के बहाने को नहीं मानता। वह अपनी मांगों में बेदर्द और कठोर है जो कभी सहायता के लिए हाथ नहीं बढ़ाता (देखें गलातियों 3:10)। ज्या आप ऐसे आदमी से विवाह करके आनन्दित होंगे या आपके लिए हर दिन एक बोझ होगा? व्यवस्था से ''ज्याहे'' होना ऐसा ही है। यह मांगें रखती थी यानी यह नाकामी को सामने लाती और उसकी भर्त्सना करती थी, परन्तु स्थायी राहत या सच्ची आशा कभी नहीं देती थी।

अब मसीह से ज्याहे होना कैसा है? ज्या मसीह सम्पूर्ण नहीं है? हां, बल्कि व्यवस्था से असीमित रूप से सम्पूर्ण है (देखें इब्रानियों 4:15; 9:14)। ज्या मसीह हमसे उतना ही नहीं मांगता जितना व्यवस्था की मांग थी? हां, वह तो उससे भी अधिक की मांग करता है (देखें मत्ती 5:27, 28; इफिसियों 5:27)। तो फिर दोनों में फर्क ज्या है? फर्क यह है कि प्रभु हमसे *प्रेम करता* है, वह हमसे सचमुच प्रेम करता है; वह हमसे इतना प्रेम करता है कि वह हमारे लिए मर गया (इफिसियों 5:25)। फर्क यह है कि अपने प्रेम के कारण वह *हमारे लिए वह करता है जो हम नहीं कर सकते*। मेरे ध्यान में एक थकी हुई जवान मां आती है जो उस सबसे जो उसे करना है, परेशान है, जिसे सब काम करने के लिए पर्याप्त समय या ऊर्जा नहीं मिलती। फिर मैं एक प्रेमी पति को उसके गले में बाहें डालते हुए यह कहते देखता हूं, ''थोड़ी देर के लिए बच्चा मुझे पकड़ा दो। खाना मैं बनाता हूं और कपड़े भी धो लेता हूं। तुम आराम करो।'' हां, मैं जानता हूं कि मेरा उदाहरण पूरा-पूरा इससे

मेल नहीं खाता है, परन्तु मैं यह समझाने की कोशिश कर रहा हूं कि हमारा एक प्रेमी, परवाह करने वाला, हमदर्द पति यीशु मसीह है!

समर्पित हों (7:2-4)

इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए आइए देखते हैं कि आत्मिक नवविवाहितों के लिए और कौन से सबक हैं। अभी-अभी जिन आयतों पर चर्चा की है उन पर एक नज़र डालें तो हमें कम से कम तीन और महत्वपूर्ण नियम मिलते हैं। पहला तो यह है कि *हमारे लिए अपने पति के प्रति समर्पित होना आवश्यक है*।

रोमियों 7:1-6 में पौलुस का उद्देश्य विवाह पर विस्तृत निर्देश देना नहीं था, परन्तु उसकी बातों से एक तथ्य स्पष्ट होता है कि वह मानता था कि विवाह *उम्रभर के लिए* है। "ज़्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, ... सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी" (आयतें 2क, 3क)। यह सुझाव दिया गया है कि मसीह की बात करते हुए "जो मरे हुओं में से जी उठा" (आयत 4घ), पौलुस केवल यीशु की पहचान नहीं कर रहा था, बल्कि वह इस बात पर भी ज़ोर दे रहा था कि 2 और 3 आयतों में दिए गए विवाह के उसके उदाहरण की तरह हमारा आत्मिक विवाह टूटेगा नहीं। मसीह "मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं" (6:9)।

विवाह जीवनभर के लिए है और एक जगह मसीह ने इस नियम का एक अपवाद दिया था (देखें मत्ती 19:3-9),[13] परन्तु पौलुस अपवादों की बात नहीं कर रहा था। वह तो केवल इस नियम की बात कर रहा था कि *विवाह जीवनभर के लिए* है! निकाह में एक दूसरे को वचन देने के लिए हमें "जब तक हम दोनों जीवित हैं" या "जब तक मौत हमें जुदा न करे" जैसे शब्दों का इस्तेमाल होता है। ये शब्द इसलिए नहीं जोड़े जाते कि वे "पारम्परिक हैं" बल्कि इसलिए जोड़े जाते हैं ज़्योंकि इनसे विवाह के लिए परमेश्वर की योजना पता चलती है।

यह दु:ख की बात है कि कुछ लोग विवाह की शपथ को हल्के से लेते हैं और इससे भी अधिक दु:ख की बात यह है कि कुछ लोग प्रभु के साथ जीवनभर के लिए मसीह की दुल्हन का भाग बन जाते हैं। यीशु ने कहा कि "जो *अन्त तक* धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा" (मत्ती 10:22)।

विश्वासयोग्य बनें (7:3)

7:1-4 से एक और स्पष्ट सबक यह है कि *हमारे लिए विवाह के अपने साथी के साथ वफादार होना आवश्यक है*: "... सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी" (आयत 3क)। "कहलाएगी" शब्द *chrematizo* से लिया गया है, जो उस शब्द का अर्थ देता है, जिसे *सार्वजनिक तौर पर* के रूप में जाना जाता है।[14] फिलिप्स के संस्करण में "वह व्यभिचार का कलंक अपने ऊपर लेती है।"

पुराने नियम में इस्राएल को यहोवा की दुल्हन होना चाहिए था; परन्तु लोग लगातार "व्यभिचारिन के समान पराये देवताओं के पीछे चलते" थे (न्यायियों 2:17; देखें 8:33; 1 इतिहास 5:25)। इस कारण इस्रालियों पर आत्मिक व्यभिचार का आरोप था (देखें यहेजकेल 23:37)। आप और मैं भी

आत्मिक व्यभिचार के दोषी हो सकते हैं। कैसे? यीशु की जगह किसी को, चाहे वह कुछ भी हो अधिक प्राथमिकता देकर। याकूब ने लिखा, "हे [आत्मिक] व्यभिचारिणियो, ज़्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है" (याकूब 4:4)। मसीह ने स्वयं कहा, "जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, और जो बेटा या बेटी को मेरे से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं" (मत्ती 10:37; देखें 6:33)।

जब कोई विवाहित पुरुष या स्त्री अपनी पत्नी या पति से बेवफाई करता या करती है तो यह बुरी बात होती है। इससे भी बुरी बात तब होती है जब मसीह की दुल्हन के अंग यीशु से बेवफाई करें। आइए हम "पवित्र और निष्कलंक" दुल्हन बनने का प्रयास करें जैसे यीशु चाहता है (इफिसियों 5:27)। समुरने की कलीसिया को यीशु ने बताया, "प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा" (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

फल देने वाले बनें (7:4, 5)

आत्मिक नवविवाहितों के लिए हम और ज़्या सबक ढूंढ सकते हैं? आयत 4 में पौलुस ने कहा कि व्यवस्था के लिए मरने का *तुरन्त* उद्देश्य[15] मसीह (से ज़्याहे जाना) के साथ मिलना था। फिर उसने *अन्तिम* उद्देश्य बताया: "ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं [*karpophoreo*]" (7:4घ)। बहुत पहले परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बताया था, "फूलो-फलो और पृथ्वी में ज़र जाओ" (उत्पत्ति 1:28)। विवाह के लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य बच्चों को जन्म देना है, वैसे ही हमारे आत्मिक विवाह में *हमारे लिए उसके लिए "फल देना" आवश्यक है* (देखें यूहन्ना 15:1, 2)।

ज़्या?

यह "फल" ज़्या है, जो हमें लाना आवश्यक है? इस रूपक पर ज़ोर देकर यह निष्कर्ष निकालना प्रलोभन देने वाला है कि पौलुस के मन में विशेष तौर पर सुसमाचार के प्रचार की बात थी। जैसे पति और पत्नी आमतौर पर बच्चों को जन्म देते हैं वैसे ही हमें भी "मसीह में बालकों" को जन्म देना चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियो 3:1; KJV)। कहते हैं कि "संतरे के पेड़ पर संतरे लगते हैं और सेब के पेड़ पर सेब ही लगते हैं। वैसे ही एक मसीही का फल एक और मसीही होता है।"

परन्तु संदर्भ में हमें इसकी व्यापक प्रासंगिकता बनानी चाहिए। अध्याय 6 के अपने अध्ययन में हमने *karpos* ("फल") का इस्तेमाल एक सामान्य अर्थ (जिसका अनुवाद 6:21, 22 में "फल" है) में किया है। अध्याय 7 में आयत 4 वाला "फल" आयत 5 के "मृत्यु का फल" से भिन्न है। इस कारण हमें आयत 4 वाले "फल" को "धार्मिकता का फल" या कुछ ऐसा फल मानना चाहिए। (देखें फिलिप्पियों 1:11.)

हम ऐसा फल कैसे लाते हैं? पहले तो सही *व्यवहार* रखकर।[16] उस व्यवहार के बारे में जो हमारा होना चाहिए, पौलुस ने लिखा कि "आत्मा का *फल* प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है" (गलातियों 5:22, 23)। फिर हमें सही *कार्यों* की आवश्यकता है। पौलुस ने कुलुस्से के भाइयों को अपना "चाल-चलन प्रभु के योग्य" रखने की

चुनौती देते हुए कहा जिससे ''वह सब प्रकार से प्रसन्न हो और तुम में हर प्रकार के भले कामों का *फल लगे*'' (कुलुस्सियों 1:10)।

ज़्या इसमें सुसमाचार के प्रचार का विचार नहीं है? नहीं। अध्याय 1 में पौलुस ने कहा कि वह वहां के लोगों में ''कुछ फल'' पाने के लिए रोम जाना चाहता था (1:13)। अधिकतर लेखकों का मानना है कि पौलुस के मन में इस आयत में नये बनने वाले मसीह लोगों को जीतना था।[17] ''फलदायक'' जीवन जीने का एक महत्वपूर्ण भाग लोगों को सिखाना और उन्हें बपतिस्मा देना है (मत्ती 28:19)। यीशु ने कहा कि वह ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' (लूका 19:10), और हमें ''भी उसके चिह्नों पर'' (1 पतरस 2:21) चलना है।

ज़्यों?

यह ज़्यों आवश्यक है कि हम परमेश्वर के लिए ''फल लाएं''? ज़्योंकि मसीह से विवाह से पूर्व हमारे लिए ऐसा करना संभव नहीं है: ''ज़्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएं जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं'' (आयत 5)। यहां ''शारीरिक'' का अर्थ ''देह में'' नहीं हो सकता ज़्योंकि जिन्हें पौलुस लिख रहा था वे अभी भी अपनी देहों में थे, परन्तु अब वे ''शारीरिक'' नहीं थे। ''शरीर'' शब्द पर बाद में व्याख्या दी जाएगी। अभी के लिए इतना ही काफी है कि हम इसे मसीह के बिना उनकी पहले की आत्मिक स्थिति मान लें।

उनके उस दयनीय स्थिति में रहते समय, ''पाप की अभिलाषाएं जो व्यवस्था के द्वारा थीं ... काम करती थीं'' (आयत 5ख)। व्यवस्था ''पाप की अभिलाषाएं'' जगाती थी? यह कैसे हो सकता है? इस पर हम और विस्तार से अगले पाठ में चर्चा करेंगे। यहां मैं केवल इतना ही कहूंगा कि शायद हम में से अधिकतर की प्रवृत्ति विद्रोही है। हम आदेशों को न मानने वाले लोग हैं। इस कारण जब व्यवस्था ने यह कहा कि ''मत करना,'' तो शरीर की अभिलाषा ने यह कहते हुए विद्रोह किया कि ''तुम *मुझे* बताने वाले कौन हो कि मैं ज़्या करूं!'' और इसका परिणाम पाप हुआ।

इसे अपने दिमाग में पीछे रख दें और आयत 5 पूरी देखें। मेरा मानना है कि इस आयत में पौलुस का रूपक शारीरिक अभिलाषा की प्रतिध्वनियों पर आधारित था। (ऐसे ही रूपक के लिए, देखें याकूब 1:14, 15.) जब कोई पुरुष और स्त्री अपनी अभिलाषाओं पर काबू पाने में नाकाम रहता है तो कई बार उसका परिणाम पाप (व्यभिचार) होता है। एक परिणाम अनचाहा गर्भ हो सकता है। इसी प्रकार जब हम ''शारीरिक'' थे तो हमारी पापपूर्ण अभिलाषाएं भड़कती थीं और हम पाप करते थे। फिर जैसे बच्चा मां के शरीर में विकसित होता है, वैसे ही ये बुरी अभिलाषाएं हमारे शरीरों में काम करती हैं (रोमियों 7:5ग; देखें REB; JB)। जीवन को लाने के बजाय, हमने ''मृत्यु'' को जन्म दिया है (आयत 5घ)। यूजीन पीटरसन ने लिखा है, ''अन्त में, हमें इसके लिए गर्भपात और मरे हुए बच्चे का जन्म ही दिखाना था'' (MSG)।

कोई यह कहते हुए आपज़ि कर सकता है कि पौलुस ने यह कभी नहीं चाहा कि विवाह के रूपक को इतना लज़्बा खींच दिया जाए। यदि ऐसा होता भी तो हम इस पर सहमत हो सकते थे कि पौलुस कह रहा था कि मसीही बनने से पहले हम ''परमेश्वर के लिए फल'' नहीं, बल्कि केवल ''मृत्यु के लिए फल'' ला सकते थे।

अब हम उस प्रासंगिकता पर आ गए हैं, जो मैं आयत 4 के अन्तिम भाग और आयत 5 के सज़्बन्ध में बनाना चाहता हूं: हमारा विवाह मसीह से हुआ है इस कारण हमें *फलदायक* होना और "परमेश्वर के लिए फल लाना" चाहिए। यीशु ने कहा, "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" (यूहन्ना 15:8क); "जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह [परमेश्वर] काट डालता है" (यूहन्ना 15:2क)। जॉन मैकार्थर ने ज़ोर दिया कि "फल रहित मसीही सच्चा मसीही नहीं है।"[18]

आयत 4 में ध्यान दें कि पौलुस तेज़ी से मध्यम पुरुष ("तुम") से वाज़्य के बीच में उज़म पुरुष ("हम") पर आ गया: "... कि *तुम* उस दूसरे के हो जाओ, ... ताकि *हम* परमेश्वर के लिए फल लाएं।" आयत 5 में उज़म पुरुष का इस्तेमाल जारी रहता है: "ज़्योंकि जब *हम* शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएं ... मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए *हमारे* अंगों में काम करती थीं।" पौलुस को शायद अचानक अपने मन परिवर्तन का ध्यान आया था। जब वह व्यवस्था के "बन्धन" में था (आयत 6), तो उसे लगता था कि वह परमेश्वर के लिए फल ला रहा है (देखें प्रेरितों 26:9)। जब मसीह ने उसे दर्शन दिया तो उसे अहसास हुआ कि वह तो केवल मृत्यु के लिए फल ला रहा था। परन्तु यीशु की देह के क्रूस पर दिए जाने के द्वारा वह व्यवस्था से छुड़ा दिया गया था और अब वह अपने प्रिय प्रभु के लिए फल ला सकता था!

सहायता करने वाले बनें (7:6)

एक समय पौलुस के पाठक पाप के दास थे (6:17क); "परन्तु" उसने कहा कि "जिस के बन्धन में हम थे, उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं" (7:6क, ख)। ज़्योंकि "सेवा करते" शज़्द "गुलाम" के अर्थ वाले *doulos* के क्रिया रूप *douleuo* से लिया गया है, इस कारण कइयों का सुझाव है कि पौलुस ने विवाह के रूपक को छोड़कर फिर से 6:16-23 के दासता के रूपक को वापस ले आया। 7:6 में आकृतियों का थोड़ा बहुत मेल हो सकता है, परन्तु यहां भी पौलुस उसी शज़्दावली का इस्तेमाल कर रहा था, जिसका इस्तेमाल उसने पहले किया। आयत 4 में उसने कहा कि हम "व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए।" अब आयत 6 में उसने कहा कि "... हम ... उस [अर्थात व्यवस्था] के लिए मर" गए। मेरा मानना है कि पौलुस विवाह के अपने उदाहरण को आधार बना रहा था।

आरज़्भ में, परमेश्वर ने स्त्री को बनाया ताकि पुरुष "के लिए ऐसा सहायक हो जो उससे मेल खाए" (उत्पज़ि 2:18)। मसीह की दुल्हन के रूप में हमारे लिए उसकी *सहायता करना* सीखना आवश्यक है। रोमियों 7:6 की शज़्दावली का इस्तेमाल करें तो हमें उसकी *सेवा* करनी चाहिए। मसीह की सेवा करने का ज़्या अर्थ है। इसका अर्थ हर हाल में, चाहे जो भी हो जाए उसकी इच्छा पूरी करने को तैयार रहना है।[19] आयत 2 में "विवाहिता स्त्री" वाज़्यांश में अनुवादित शज़्द का "विवाहिता" का यूनानी शज़्द *hupandros* नये नियम में यहां एक ही बार मिलता है। इस मिश्रित शज़्द का अर्थ "पुरुष [*aner* से *andros*] के अधीन [*hupo*]" है। इफिसियों 5 में विवाह के विस्तृत रूपक में पौलुस ने लिखा कि मसीह "कलीसिया का सिर है" और कलीसिया "मसीह के अधीन" होनी चाहिए (आयतें 23, 24)।

प्रभु की सेवा करने के प्रति हमारा व्यवहार ज़्या होना चाहिए? ज़्या हमें हठी होना चाहिए कि हम उसकी सेवा नहीं करेंगे? यदि हमें समझ है कि उसने हमारे लिए ज़्या किया है, तब तो नहीं। उसने इतनी तरह से *हमारी* सेवा की है? ज़्या हमें उसकी सेवा करते समय कम से कम करनी चाहिए? यदि हम उससे प्रेम करते हैं, तो नहीं। *प्रेम* हमें प्रभु के लिए केवल व्यवस्था का पालन करने से कहीं *अधिक* करने को प्रेरित करेगा! अब हम अन्तिम बिन्दु पर आ गए हैं।

प्रेम करने वाले बनें (7:6)

हमें मसीह को वैसे ही प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए जैसे कोई प्रिय पत्नी अपने पति को प्रसन्न करने की कोशिश करती है, न कि अपने स्वामी की सेवा दु:खी होकर करने वाले सेवक की तरह। पौलुस ने कहा, "लेख की पुरानी रीति [*gramma* से] पर नहीं, बरन आत्मा [*pneuma* से] की नई रीति पर सेवा करते हैं" (7:6ख, ग)। इससे पहले कि हम इन शब्दों के अर्थ पर चर्चा करें, आइए देखते हैं कि उनके अर्थ ज़्या *नहीं* हैं। लोग कई बार "व्यवस्था की आत्मा" और "व्यवस्था का लेख" की बात करते हैं। कई यह दावा करते हैं कि "लेख की नहीं, बल्कि व्यवस्था की आत्मा का महत्व है।" जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने कहा, "जो अन्तर पौलुस के मन में था" वह "व्यवस्था के कथित 'लेख' और 'आत्मा' के बीच का अन्तर" *नहीं* है।[20] डग्लस जे. मू ने माना कि "पौलुस इसके किसी भी इस्तेमाल में भाषा की इस प्रासंगिकता के लिए मामूली या बिल्कुल नहीं समर्थन देता है (रोयिमों 2:29; 7:6; 2 कुरिन्थियों 3:6-7)।"[21]

रोमियों 7:6 के अन्तिम भाग में दो अन्तर दिए गए हैं। पहला तो "नयेपन" और "पुरानेपन" का है, या CJB में जैसे है, "नया ढंग" और "पुराना ढंग।" पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच इन शब्दों में अन्तर को न देखना कठिन होगा (देखें इब्रानियों 9:15; यिर्मयाह 31:31-34)।[22] पौलुस ने आत्मा/लेख के अन्तर का तीन बार इस्तेमाल किया। इनमें से पहला इस्तेमाल रोमियों 2:29 में संदर्भ यह संकेत देता है कि "लेख" यहां मूसा की व्यवस्था को कहा गया है।[23] 2 कुरिन्थियों 3:6 में "लेख" "पत्थरों पर खोदी गई [दस आज्ञाएं]" हैं (आयत 7)। ऐसे ही रोमियों 7:6 में "लेख" शब्द मुज़्यतया मूसा की व्यवस्था के लिए है (देखें आयत 7)। हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पौलुस का नयापन/पुरानापन पुरानी और नई वाचाओं में अन्तर है।

आयत 6 के अन्तिम भाग में "आत्मा" और "लेख" के बीच एक दूसरा अन्तर बनाया गया है। थॉज़स ने यह ध्यान दिलाया कि पतरस ने केवल दो वाचाओं में अन्तर नहीं किया बल्कि "दो वाचाओं के *नियमों*" में भी अन्तर किया।[24]

आमतौर पर अंग्रेजी में आत्मा के लिए इस बात में अनिश्चितता पाई जाती है कि "Spirit" के लिए "S" बड़ा होना चाहिए या छोटा "s" जो इसे "spirit" बना देता है। NASB और अन्य कई अनुवादों में "Spirit" है जबकि कुछ अनुवादों में "spirit" (KJV; NEB; SEB)। हम अध्याय 8 के निकट आ रहे हैं, जिसमें पौलुस ने पवित्र आत्मा के काम पर ज़ोर दिया, सो शायद "Spirit" को "spirit" से अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए।[25] यदि पौलुस पवित्र आत्मा की बात कर रहा था तो वह न केवल सेवा के नये *उद्देश्य* की बात कर रहा था बल्कि बड़ी सेवा के नये *साधनों*[26] का भी अनुमान लगा रहा था (देखें 8:13, 26)।

पौलुस के दिमाग में पवित्र आत्मा की बात थी या मनुष्य के आत्मा की, इससे उसके मुज़्य

शब्दों के ज़ोर में कोई फर्क नहीं पड़ता। "लेख के पुरानेपन में" सेवा करने का अर्थ नियम/कामों के प्रबन्ध के अधीन धर्मी ठहरने की कोशिश है। व्यवस्था के अधीन लक्ष्य उस कोड के नियमों और विधियों को *पूरा-पूरा* मानना था जो कि मनुष्य के लिए सम्भव नहीं था। "आत्मा के नयेपन में सेवा" करना (या "आत्मा के नयेपन में") आनन्द से परमेश्वर की सेवा करना है, जो इस ज्ञान से मिलता है कि हमें अनुग्रह/विश्वास के प्रबन्ध में धर्मी ठहराया गया है। सेवा हम अब भी करते हैं; हम अब भी पूरे मन से परमेश्वर की दी हुई आज्ञा को मानने की कोशिश करते हैं परन्तु अब भय के कारण नहीं बल्कि उससे प्रेम के कारण करते हैं।

इस पाठ में जो प्रासंगिकता मैं बनाना चाहता हूं वह यीशु के साथ हमारे वैवाहिक सम्बन्ध की है। वैवाहिक सम्बन्ध दिए गए कुछ नियमों को अक्षर-अक्षर मानना नहीं होता। यह तो दो लोगों के बीच में एक-दूसरे से प्रेम करना और एक दूसरे को प्रसन्न करने की कोशिश करना है। मैं कई विवाहित लोगों को जानता हूं जो परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई भूमिका में खुश नहीं थे। मैंने लोगों को इस प्रकार बुड़बुड़ाते सुना है: "हमारे पास कोई और तरीका नहीं है क्योंकि बाइबल यही सिखाती है।" मैं ऐसे कई मसीही लोगों को जानता हूं जो मसीह के नये नियम द्वारा उन पर लगाई गई शर्तों से अप्रसन्न हैं। उनका व्यवहार "हमें यह सब करना *पड़ रहा है* क्योंकि यह परमेश्वर की आज्ञा है" वाला लगता है।

हम में से जो लोग मसीह की दुल्हन का भाग हैं, उन्हें "करना पड़ रहा है" से "चाहता हूं" वाला व्यवहार बनाना होगा। हमें मांग करने वाले पति के आदेशों को अनिच्छा से मानने वाले होना छोड़कर प्रेमी पति की *इच्छाओं* को आनन्द से पूरा करने की ऊपरी स्थिति में आना चाहिए। यूहन्ना ने कहा, "हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया" (1 यूहन्ना 4:19; KJV)। डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने लिखा है:

> परन्तु मसीह के साथ विवाह प्रेम का वह सम्बन्ध है जो स्वतन्त्रता से अधीन होता है और आनन्द से आज्ञा मानता है। पौलुस द्वारा बताया गया *"लेख का पुरानापन"*... आमतौर पर नीरस और क्रोधभरा पुराना व्यवहार है; बाद वाला जिसे वह *"आत्मा का नयापन"* कहता है, ताजा और स्वैच्छिक है।[27]

सारांश

अन्त में मैं तीन सच्चाइयों को प्रकाशमय करना चाहता हूं। पहला, आत्मिक अर्थ में आपका विवाह किसी न किसी से अवश्य हुआ है। शारीरिक और कानूनी रूप से आप विवाहित या अविवाहित हो सकते हैं, परन्तु आत्मिक क्षेत्र में ऐसा नहीं है। यदि आपका विवाह मसीह से नहीं हुआ है तो फिर किसी और से हुआ है। आपका "पति" मनुष्य का बनाया कोई धार्मिक प्रबन्ध, आपकी अपनी स्वार्थी इच्छाएं या जो भी हो, परन्तु आपका विवाह मसीह को छोड़ किसी दूसरे से हुआ है।

दूसरा, सच्चा और सदा रहने वाला आनन्द आपको मसीह से विवाह करने पर ही मिल सकता है। जैसा कि पहले कहा गया है, *कलीसिया* मसीह की दुल्हन है; कलीसिया यीशु के लहू के द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों की मण्डली है (इफिसियों 5:23, 25; प्रेरितों 20:28)। मसीह के लहू के द्वारा आपका उद्धार तब होता है जब आप विश्वास से उसकी इच्छा को मानते हैं (रोमियों 6:3, 4, 17,

18)। यहां पर, परमेश्वर आप को कलीसिया में मिलाता है (प्रेरितों 2:36-38, 41, 47; KJV; देखें 1 कुरिन्थियों 12:13); यानी आप मसीह की दुल्हन का भाग बन जाते हैं। यदि आपने बपतिस्मा लेने के द्वारा अभी तक अपने विश्वास को नहीं दिखाया है तो मैं आप से इसी समय अपना विश्वास दिखाने को कहूंगा।

तीसरा (और यह इस पाठ का सबसे प्रमुख ज़ोर है), मसीह के साथ विवाह हो जाने पर, आपको इस प्रकार *कार्य* करना होगा। मैं मानता हूं कि जब पहले मेरा विवाह हुआ था (उन्नीस वर्ष की आयु में "वयस्क होने पर"), तो मुझे विवाह के बारे में थोड़ा बहुत पता था। मैंने यह सीखने के लिए कि विवाहित होने का ज़्या अर्थ है पचास से अधिक साल लगा दिए और (मेरी पत्नी आपको बता सकती है) अभी भी मुझे बहुत कुछ जानने की आवश्यकता है। शायद आप आत्मिक नवविवाहित अर्थात नये बने मसीही हैं। यदि ऐसा है तो इस पाठ के मुज़्य विचार से आपको यह समझने में सहायता मिलनी चाहिए कि आपके नये सज़्बन्ध में ज़्या-ज़्या है। आपको यह पता होना आवश्यक है कि आप मसीह की दुल्हन का भाग हैं और आपको नीचे दिए गए व्यवहार अपने अन्दर लाने आवश्यक हैं:

- समर्पित हों।
- विश्वासयोग्य बनें।
- फल देने वाले बनें।
- सहायता करने वाले बनें।
- प्रेम करने वाले बनें।

ज़्या इन वाज़्यांशों से मसीह के साथ आपके वर्तमान सज़्बन्ध का पता चलता है या उस सज़्बन्ध में कुछ कमी है। शायद आपको पश्चाज़ाप से प्रभु के पास वापस आने की आवश्यकता है (प्रेरितों 8:22)। जान लें कि वह अभी भी आपसे प्रेम करता है और चाहता है कि आप घर वापस आ जाएं, और यह केवल तभी हो सकता है यदि आप अपने घमण्ड को छोड़ दें। यदि आपको प्रज़ु के पास वापस आने की आवश्यकता है तो आज ही ज़्यों नहीं आ जाते?

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

पुराने टीकाकार रोमियों 7:1-6 पर एक विस्तृत रूपक बनाते थे, जिसमें हर बात "मेल खाती" होनी आवश्यक थी, परन्तु यहां वचन कोई रूपक नहीं है, यह विस्तृत रूपक (अलंकार) है। इस प्रस्तुति में मैंने आकृति को बहुत अधिक दबाने के विरुद्ध चेतावनी दी है। कइयों को लग सकता है कि मैंने अपने ही निर्देश को तोड़ा है। मेरा मानना है कि जो तुलनाएं मैंने की हैं, वे न्यायसंगत हैं, परन्तु निर्णय आपको ही लेना है कि वे सही हैं या नहीं। इन आयतों को प्रार्थनापूर्वक और ध्यान से अध्ययन करें, और फिर अपनी पूरी शज़्ति से इसका प्रचार करें या सिखाएं।

टिप्पणियां

[1]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 48. [2]यदि आपके यहां ऐसा होता है तो आप अपने सुनने वालों के लिए उपयुक्त उदाहरण इस्तेमाल करें। [3]लैरी डियसन, *''दि राइटयसनेस ऑफ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (ग्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कज़्युनिकेशंस, 1989), 182. [4]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ ़फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 193. [5]अमेरिका के रहने वालों के लिए राष्ट्रपति जॉन एफ़ कैनेडी के आरोपी हत्यारे ली हार्वे ओस्वल्ड का उदाहरण होगा। ओस्वल्ड को न्यायालय में पेशी के लिए ले जाए जाने से पहले ही जैक रूबी ने मार डाला था। [6]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ, अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 55. [7]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 271-72, एन. 10. [8]लेखकों ने उसके ''तर्क की कमी'' के लिए पौलुस की आलोचना की है। परमेश्वर की प्रेरणा रहित लोगों के लिए परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए व्यक्ति की आलोचना करना कहां तक सही है ज़्योंकि वह तर्क के मानवीय नियमों से मेल नहीं खाता। [9]कई लोग यह ध्यान दिलाते हुए कि पति की मृत्यु होने पर पत्नी ''पत्नी के रूप में मरती'' है, आकृति को बदलने से परहेज़ करते हैं। अन्य शब्दों में वह अभी भी स्त्री है, परन्तु पत्नी नहीं रही। [10]मौरिस, 273.

[11]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू दि रोमन्स,* संशो. संस्क. दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 93. [12]स्टॉट, 195 से लिया गया; डी. मार्टिन लोयर्ड-जोन्स, *रोमन्स: दि लॉ: इट्स फंक्शन एण्ड लिमिट्स (7:1-8:4)* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 51-52. [13]कई लोग रोमियों 7:1-6 को अलग करने की कोशिश करके कहते हैं कि तलाक के लिए बाइबल में कोई कारण *नहीं* है, परन्तु व्याख्या का मूल नियम दिए गए विषय पर बाइबल की *सब* बातों पर विचार करना है। [14]वाइन, 87. [15]स्टॉट, 195. [16]जॉन मैकआर्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकआर्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 362. [17]*रोमियों, भाग 1* में ''आरोपियों की तरह दोषी! (1:18-25)'' पाठ में 1:13 पर टिप्पणियां देखें। [18]मैकआर्थर, 364. [19]अपने सुनने वालों के लिए उन विशेष ढंगों की प्रासंगिकता बनाएं जिन से वे वहां मसीह की सेवा कर सकें जहां वे रहते हैं। [20]स्टॉट, 196.

[21]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 221. [22]स्टॉट, 196 में इस अन्तर की चर्चा की गई है। [23]*रोमियों, 1* पुस्तक में ''जो असली यहूदी है ज़्या वह खड़ा होगा? (रोमियों 2:17-29)'' पाठ में पर टिप्पणियां देखें। [24]थॉमस, 50. [25]आत्मा के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''spirit'' (छोटा ''s'') का एक तर्क यह है कि यूनानी धर्मशास्त्र ''आत्मा'' के लिए शब्द से पहले कोई निश्चित उपपद नहीं है। मूल धर्मशास्त्र में यह ''आत्मा के नये पन में'' है (देखें KJV)। [26]स्टॉट, 197. [27]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग दि न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* द कज़्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 144.